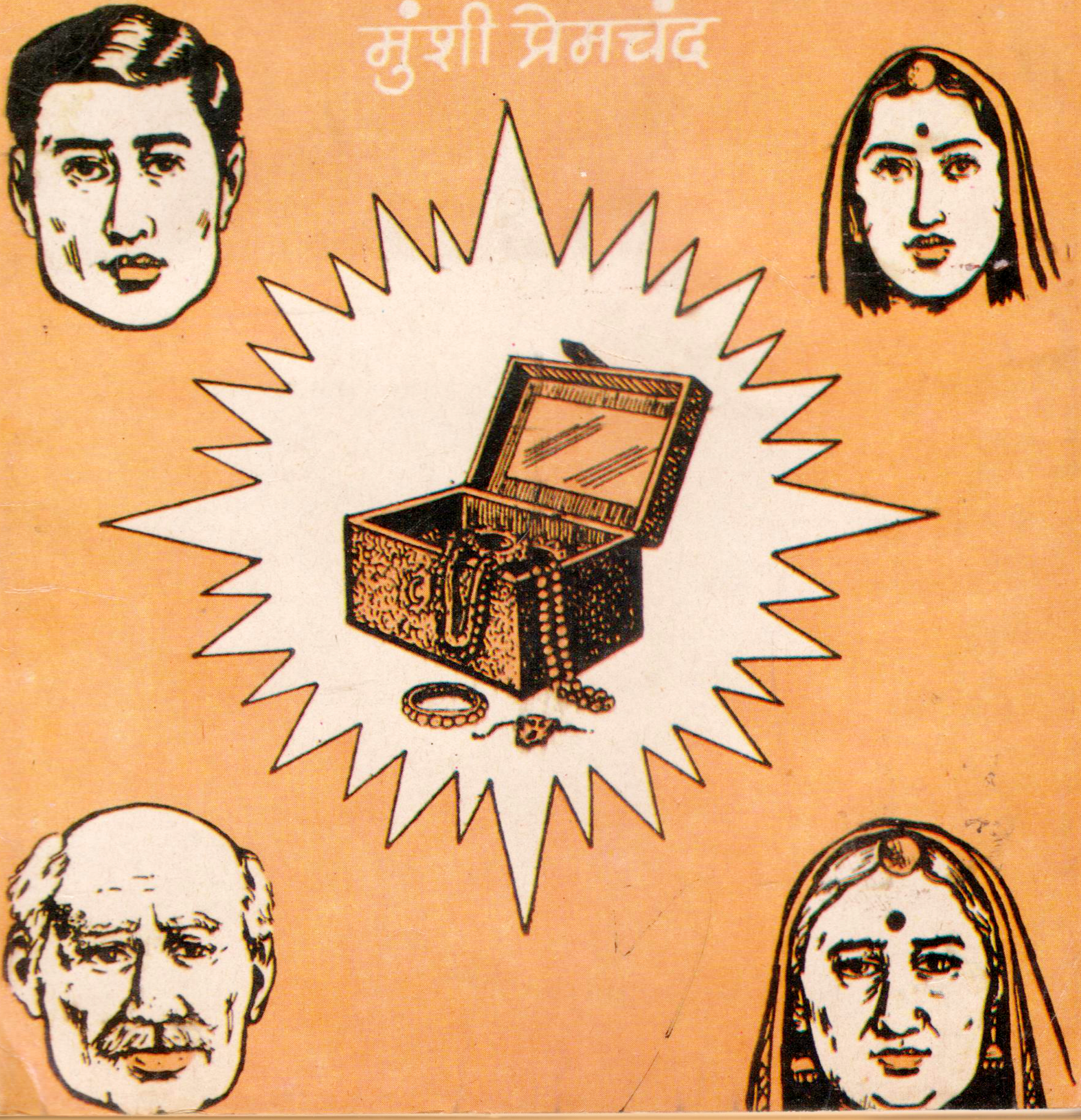
चमत्कार

मुंशी प्रेमचंद



चमत्कार

मुन्शी प्रेमचन्द



[redacted]	:	[redacted]
संस्करण	:	1994
मूल्य	:	**पन्द्रह रुपये मात्र**
मुद्रक	:	दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर-3



चमत्कार

1

बी० ए० पास करने के बाद चन्द्रप्रकाश को एक ट्यूशन करने के सिवा और कुछ न सूझा। उनकी माता पहले ही मर चुकी थीं, इसी साल पिता का भी देहान्त हो गया और प्रकाश जीवन के जो मधुर स्वप्न देखा करते थे, वे सब धूल में मिल गए। पिता ऊँचे ओहदे पर थे, उनकी कोशिश से चन्द्रप्रकाश को कोई अच्छी जगह मिलने की पूरी आशा थी; पर वे सब मनसूबे धरे रह गए और अब गुजर-बसर के लिए वही 30 महीने की ट्यूशन रह गई। पिता ने कुछ सम्पत्ति भी न छोड़ी, उलटे वधू का बोझ और सिर पर लाद दिया। और स्त्री भी मिली, तो पढ़ी-लिखी, शौकीन, जबान

की तेज, जिसे मोटा खाने और मोटा पहनने से मर जाना कबूल था। चन्द्रप्रकाश को 30) की नौकरी करते शर्म तो आयी; लेकिन ठाकुर साहब ने रहने का स्थान देकर उनके आँसू पोंछ दिए। यह मकान ठाकुर साहब के मकान से बिलकुल मिला हुआ था—पक्का, हवादार, साफ-सुथरा और जरूरी सामान से लैस। ऐसा मकान 20) से कम पर न मिलता, काम केवल दो घंटे का। लड़का था तो लगभग उन्हीं की उम्र का; पर बड़ा कुँदजेहन, कामचोर। अभी नवें दरजे में पढ़ता था। सबसे बड़ी बात यह कि ठाकुर और ठकुराइन दोनों प्रकाश का बहुत आदर करते थे, बल्कि उसे लड़का ही समझते थे। वह नौकर नहीं, घर का आदमी था और घर के हरएक मामले में उसकी सलाह ली जाती थी। ठाकुर साहब अंग्रेजी नहीं जानते थे। उसकी समझ में अंग्रेजीदाँ लौंडा भी उनसे ज्यादा बुद्धिमान, चतुर और तजरबेकार था।

2

सन्ध्या का समय था। प्रकाश ने अपने शिष्य वीरेन्द्र को पढ़ाकर छड़ी उठायी, तो ठकुराइन ने आकर कहा—अभी न जाओ बेटा, जरा मेरे साथ आओ, तुमसे कुछ सलाह करनी है।

प्रकाश ने मन में सोचा—आज कैसी सलाह है, वीरेन्द्र के सामने क्यों नहीं कहा? उसे भीतर ले जाकर रमा देवी ने कहा—तुम्हारी क्या सलाह है, बीरू का ब्याह कर दूँ? एक बहुत अच्छे घर से सन्देसा आया है।

प्रकाश ने मुस्कराकर कहा—यह तो बीरू बाबू ही से पूछिए।

"नहीं, मैं तुमसे पूछती हूँ।"



प्रकाश ने असमंजस में पड़कर कहा—मैं इस विषय में दे सकता हूँ ? उनका बीसवाँ साल तो है; लेकिन यह समझ पढ़ना हो चुका ।

"तो अभी न करूँ, यही सलाह है ?"

"जैसा आप उचित समझें। मैंने तो दोनों बातें कह दीं।

"तो कर डालूँ ? मुझे यही डर लगता है कि लड़का न जाय ।"

"मेरे रहते इसकी तो आप चिन्ता न करें। हाँ, इच्छा हो तो कर डालिए। कोई हरज भी नहीं है।"

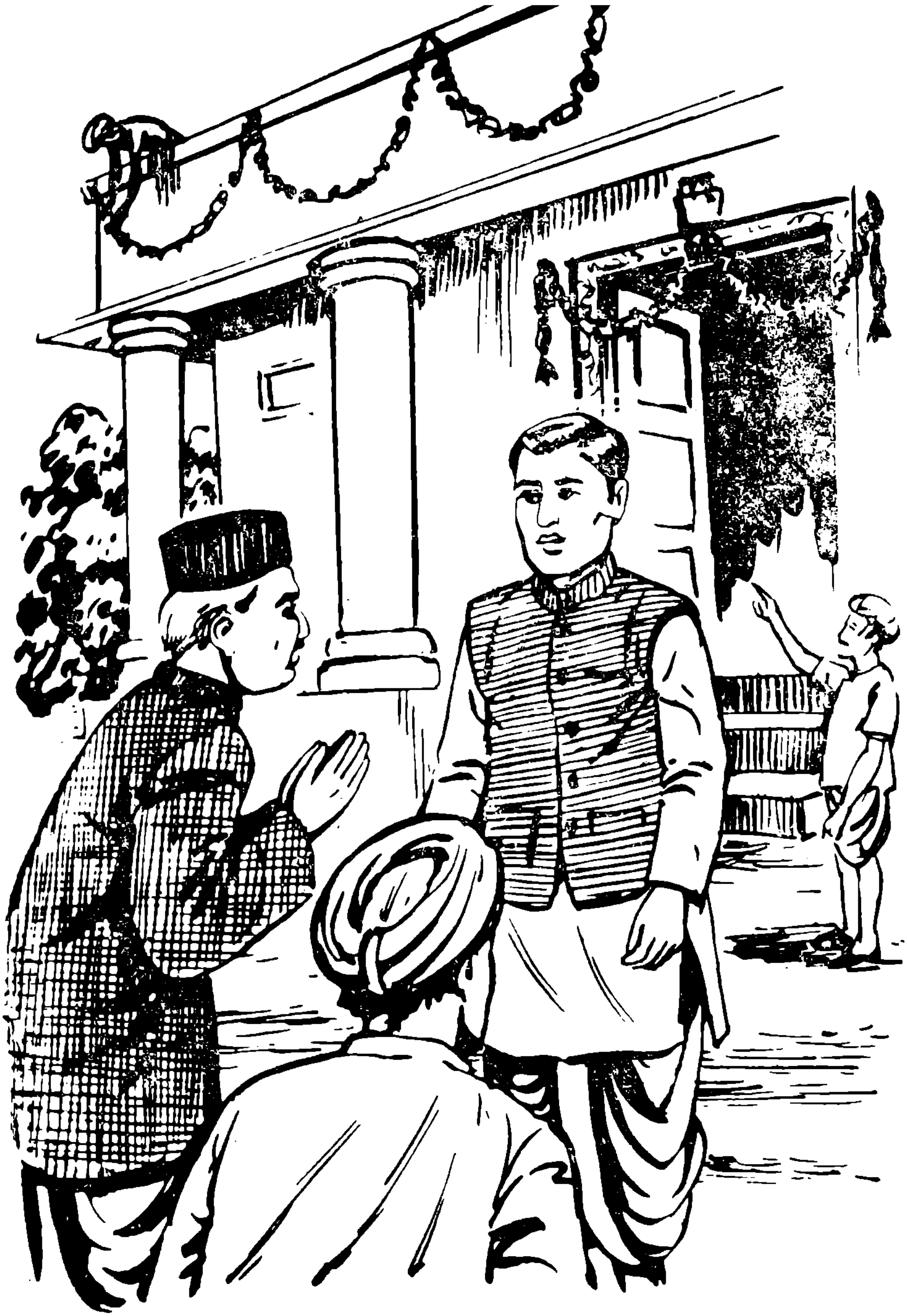
"सब तैयारियाँ तुम्हीं को करनी पड़ेंगी, यह समझ लो।"

"तो मैं इनकार कब करता हूँ।"

रोटी की खैर मनाने वाले शिक्षित युवकों में एक प्रकार की दुविधा होती है, जो उन्हें अप्रिय सत्य कहने से रोकती है। प्रकाश में भी यही कमजोरी थी।

बात पक्की हो गई और विवाह का सामान आने लगा। ठाकुर साहब उन मनुष्यों में थे, जिन्हें अपने ऊपर विश्वास नहीं होता। उनकी निगाह में प्रकाश की डिग्री, उनके साठ साल के अनुभव से कहीं मूल्यवान थी। विवाह का सारा आयोजन प्रकाश के हाथ में था। दस-बारह हजार रुपए खर्च करने का अधिकार कुछ कम गौरव की बात न थी। देखते-देखते एक फटेहाल युवक जिम्मेदार मैनेजर बन बैठा। कहीं कपड़ेवाला उसे सलाम करने आया है, कहीं मुहल्ले का बनिया घेरे हुए है। कहीं गैस और शामियानेवाला खुशामद कर रहा है। वह चाहता, तो दो-चार सौ रुपए बड़ी आसानी से बना लेता, लेकिन इतना नोच न था। फिर उसके साथ क्या दगा करता, जिसने सब कुछ उसी पर छोड़ दिया था? पर जिस दिन उसने पाँच हजार के जेवर खरीदे, उस दिन उसका मन चंचल हो उठा।

घर आकर चम्पा से बोला—हम तो यहाँ रोटियों के मोहताज हैं और दुनियां में ऐसे-ऐसे आदमी पड़े हुए हैं, जो हजारों लाखों-रुपयों के जेवर बनवा डालते हैं। ठाकुर साहब ने आज बहू के चढ़ावे के लिए पाँच



हजार के जेवर खरीदे। ऐसी-ऐसी चीजें कि देखकर आँखें ठण्ड़ी हो जायँ। सच कहता हूँ, बाज चीजों पर तो आँख नहीं ठहरती थी।

चम्पा ईर्ष्या-जनित विराग से बोली—उँह, हमें क्या करना है? जिन्हें ईश्वर ने दिया है, वे पहनें। यहाँ तो रो-रोकर मरने के ही लिए पैदा हुए हैं।

चन्द्रप्रकाश—इन्हीं लोगों की मौज है। न कमाना, न धमाना। बाप-दादा छोड़ गए हैं, मजे से खाते और चैन करते हैं। इसी से कहता हूँ, ईश्वर बड़ा अन्यायी है।

चम्पा—अपना-अपना पुरुषार्थ है, ईश्वर का क्या दोष? तुम्हारे बाप-दादा छोड़ गए होते, तो तुम भी मौज करते। यहाँ तो रोटियाँ चलनी मुश्किल हैं, गहने-कपड़े को कौन रोए? और न इस जिन्दगी में कोई ऐसी आशा ही है। कोई गत की साड़ी भी नहीं रही कि किसी भले आदमी के घर जाऊँ तो पहन लूँ। मैं तो इसी सोच में हूँ कि ठकुराइन के यहाँ ब्याह में कैसे जाऊँगी? सोचती हूँ, बीमार पड़ जाती, तो जान बचती।

यह कहते-कहते उसकी आँखें भर आईं।

प्रकाश ने तसल्ली दी—साड़ी तुम्हारे लिए अवश्य लाऊँगा। अब क्या इतना भी न कर सकूँगा? मुसीबत के ये दिन क्या सदा बने रहेंगे? जिन्दा रहा, तो एक दिन तुम सिर से पाँव तक जेवरों से लदी रहोगी।

चम्पा मुस्कराकर बोली—चलो, ऐसी मन की मिठाई मैं नहीं खाती। निबाह होता जाय, यही बहुत है। गहनों की साध नहीं है।

प्रकाश ने चम्पा की बातें सुनकर लज्जा और दुःख से सिर झुका लिया। चम्पा उसे इतना पुरुषार्थहीन समझती है।

3

रात को दोनों भोजन करके लेटे, तो प्रकाश ने फिर गहनों की बात छेड़ी। गहने उसकी आँखों में बसे हुए थे—इस शहर में ऐसे बढ़िया गहने बनते हैं, मुझे इसकी आशा न थी।

चम्पा ने कहा—कोई और बात करो। गहनों की बात सुनकर जी जलता है।

"वैसी चीजें तुम पहनो, तो रानी मालूम होने लगो।"

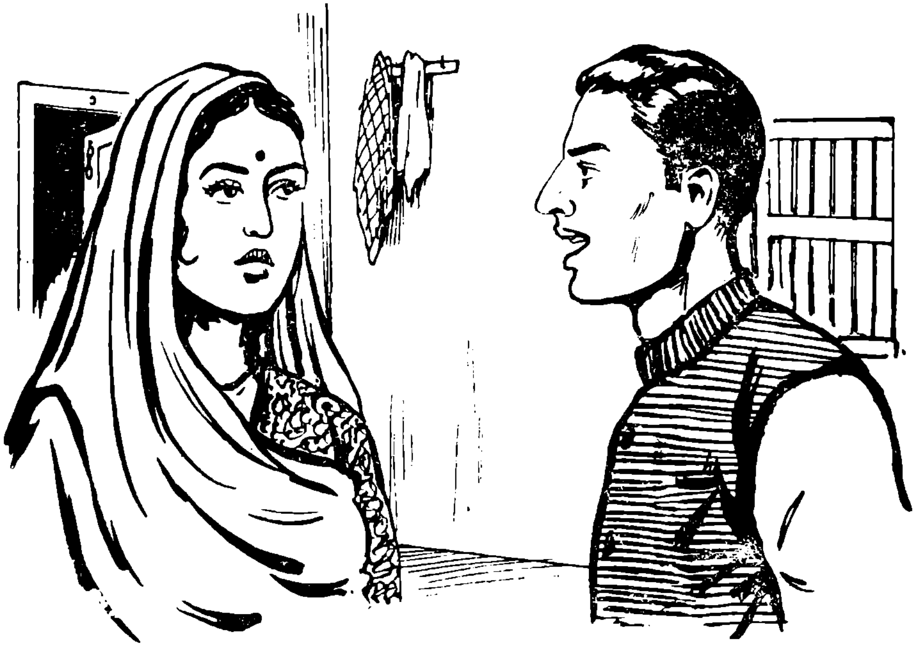
"गहनों से क्या सुन्दरता बढ़ जाती है? मैंने तो ऐसी बहुत-सी औरतें देखी हैं, जो गहने पहनकर भद्दी दीखने लगती हैं।"

"ठाकुर साहब भी मतलब के यार हैं। यह न हुआ कि कहते, इसमें से कोई चीज चम्पा के लिए भी लेते जाओ।"

"तुम भी कैसी बच्चों की-सी बातें करते हो?"

"इसमें बचपन की क्या बात है! कोई उदार आदमी कभी इतनी कृपणता न करता।"

"मैंने तो कोई ऐसा उदार आदमी नहीं देखा, जो अपनी बहू के ग़हने किसी ग़ैर को दे दे।"



"मैं गैर नहीं हूँ। हम दोनों एक ही मकान में रहते हैं, मैं उनके लड़के को पढ़ाता हूँ और शादी का सारा इन्तजाम कर रहा हूँ अगर सौ-दो-सौ की कोई चीज़ दे देते, तो वह निष्फल न जाती; मगर धनवानों का हृदय धन के भार से दबकर सिकुड़ जाता है। उसमें उदारता के लिए स्थान ही नहीं रहता।"

रात के बारह बज गए हैं, फिर भी प्रकाश को नींद नहीं आती। बार-बार वही चमकीले गहने आँखों के सामने आ जाते हैं। कुछ बादल हो आये हैं, और बार-बार बिजली चमक उठती है।

सहसा प्रकाश चारपाई से उठ खड़ा हुआ। उसे चम्पा का आभूषण-हीन अंग देखकर दया आई। यही तो खाने-पहनने की उम्र है और

इसी उम्र में इस बेचारी को हरएक चीज के लिए तरसना पड़ रहा है। वह दबे-पाँव कमरे से बाहर निकलकर छत पर आया। ठाकुर साहब की छत इस छत से मिली हुई थी। बीच में एक पाँच फुट ऊँची दीवार थी। वह दीवार पर चढ़कर ठाकुर साहब की छत पर आहिस्ता से उतर गया। घर में बिलकुल सन्नाटा था।

उसने सोचा—पहले जीने से उतरकर ठाकुर साहब के कमरे में चलूं। अगर वह जाग गए तो जोर से हँसूंगा और कहूँगा—कैसा चरका दिया, या कह दूंगा, मेरे घर की छत से कोई आदमी इधर आता दिखाई दिया, इसलिए मैं भी उसके पीछे-पीछे आया कि देखूं, यह क्या करता है। अगर सन्दूक की कुंजी मिल गई, तो फिर फतह है। किसी का मुझ पर सन्देह ही न होगा, सब लोग नौकरों पर सन्देह करेंगे। मैं भी कहूँगा—साहब, नौकरों की हरकत है, इन्हें छोड़कर और कौन ले जा सकता है? मैं बेदाग बच जाऊँगा। शादी के बाद कोई दूसरा घर ले लूंगा। फिर धीरे-धीरे एक-एक चीज चम्पा को दूंगा, जिसमें उसे कोई सन्देह न हो।

फिर भी वह जीने से उतरने लगा, तो उसकी छाती धड़क रही थी।

4

धूप निकल आई थी। प्रकाश अभी सो रहा था कि चम्पा ने उसे जगाकर कहा—बड़ा गजब हो गया। रात को ठाकुर साहब के घर में चोरी हो गई। चोर गहने की सन्दूकची उठा ले गया।

प्रकाश ने पड़े-पड़े पूछा—किसी ने पकड़ा नहीं चोर को ?

"किसी को खबर भी हो ! वही सन्दूकची ले गया, जिसमें ब्याह के गहने रखे थे। न-जाने कैसे कुंजी उड़ा ली और न-जाने कैसे उसे मालूम हुआ कि इस सन्दूक में सन्दूकची रखी है !"

"नौकरों की कार्रवाई होगी। बाहरी चोर का यह काम नहीं है।"

"नौकर तो उनके तीनों पुराने हैं।"

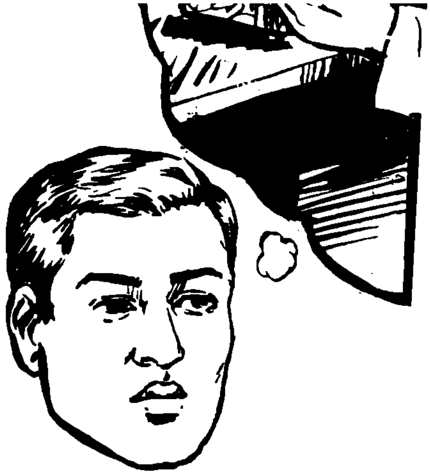
"नीयत बदलते क्या देर लगती है ? आज मोका देखा, उड़ा ले गये !"

"तुम जाकर जरा उन लोगों को तसल्ली तो दो। ठकुराइन बेचारी रो रही थीं। तुम्हारा नाम ले-लेकर कहती थीं कि बेचारा महीनों इन गहनों के लिए दौड़ा, एक-एक चीज अपने सामने जँचवायी और चोर दाढ़ीजारों ने उसकी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया।"

प्रकाश चटपट उठ बैठा और घबड़ाता हुआ-सा जाकर ठकुराइन से बोला—यह तो बड़ा अनर्थ हो गया माताजी, मुझसे तो अभी-अभी चम्पा ने कहा।

ठाकुर साहब सिर पर हाथ रखे बैठे हुए थे। बोले—कहीं सेंध नहीं, कोई ताला नहीं टूटा, किसी दरवाजे की चूल नहीं उतरी। समझ में नहीं आता, चोर आया किधर से ?

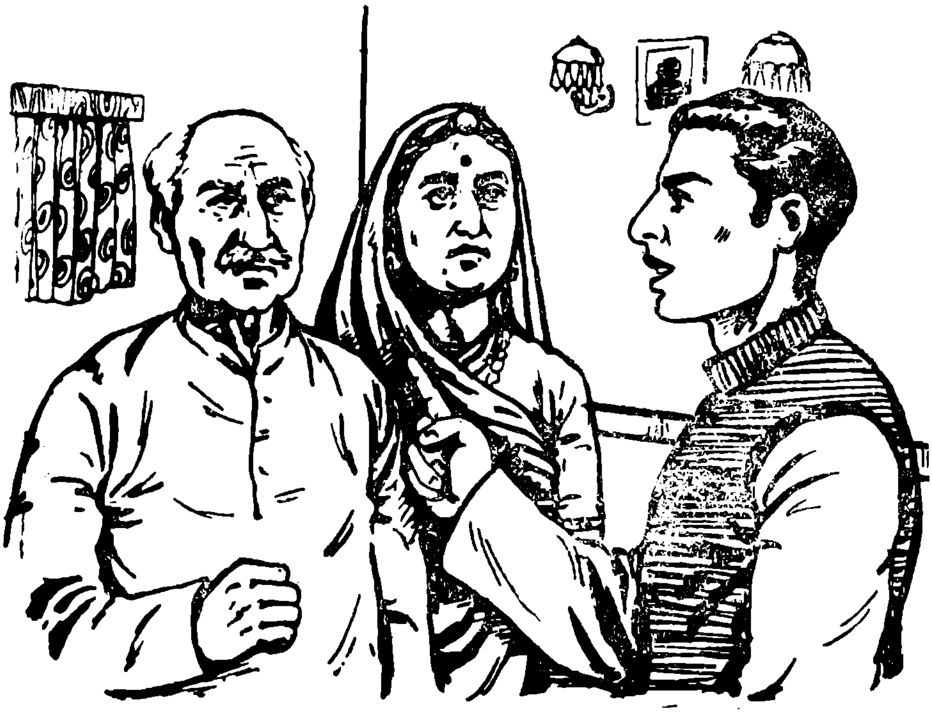
ठकुराइन ने रोकर कहा—मैं तो लुट गई भैया, ब्याह सिर पर खड़ा है, कैसे क्या होगा, भगवान् ! तुमने दौड़-धूप की थी, तब कहीं जाके चीजें आई थीं। न-जाने किस मनहूस सायत में लग्न आई थी।



प्रकाश ने ठाकुर साहब
की शरारत मालूम होती है।

ठकुराइन ने विरोध किया—अरे नहीं भैया, नौकरों में ऐसा कोई नहीं। दस-दस हजार रुपए यों ही ऊपर रखे रहते थे, कभी एक पाई भी नहीं गयी।

ठाकुर साहब ने नाक सिकोड़कर कहा--तुम क्या जानो, आदमी का मन कितना जल्दी बदल जाया करता है। जिसने अभी तक चोरी नहीं की, वह कभी चोरी न करेगा, यह कोई नहीं कह सकता। मैं पुलिस में रिपोर्ट करूँगा और एक-एक नौकर की तलाशी कराऊँगा। कहीं माल उड़ा दिया होगा। जब पुलिस के जूते पड़ेंगे, तो आप ही कबूलेंगे।



प्रकाश ने पुलिस का घर में आना खतरनाक समझा। कहीं उन्हीं के घर में तलाशी ले, तो अनर्थ ही हो जाय। बोले—पुलिस में रिपोर्ट करना और तहकीकात कराना व्यर्थ है। पुलिस माल तो न बरामद कर सकेगी। हाँ, नौकरों को मार-पीट भले ही लेगी। कुछ नजर भी उसे चाहिए, नहीं तो कोई दूसरा ही स्वाँग खड़ा कर देगी। मेरी तो यही सलाह है कि एक-एक नौकर को एकान्त में बुलाकर पूछा जाय।

ठाकुर साहब ने मुंह बनाकर कहा—तुम भी क्या बच्चों की-सी बातें करते हो, प्रकाश बाबू। बोलो, चोरी करनेवाला अपने-आप कबूलेगा! तुम मार-पीट भी तो नहीं कर सकते। हाँ, पुलिस में रिपोर्ट करना मुझे भी फिजूल मालूम होता है। माल बरामद होने से रहा, उलटे महीनों की परेशानो हो जाएगी।

प्रकाश—लेकिन कुछ तो करना ही पड़ेगा।

ठाकुर—कोई लाभ नहीं। हाँ, अगर कोई खुफिया पुलिस हो, जो चुपके-चुपके पता लगाए, तो अलबत्ता माल निकल आये; लेकिन यहाँ ऐसी पुलिस कहाँ? तकदीर ठोककर बैठ रहो, और क्या।

प्रकाश—आप बैठ रहिए लेकिन मैं यों बैठने वाला नहीं। मैं इन्हीं नौकरों के सामने चोर का नाम निकलवाऊँगा।

ठकुराइन—नौकरों पर मुझे पूरा विश्वास है। किसी का नाम निकल भी आये, तो मुझे सन्देह ही रहेगा। किसी बाहर के आदमी का काम है। चाहे जिधर से आया हो; पर चोर आया बाहर से। तुम्हारे कोठे से भी तो आ सकता है।

ठाकुर—हाँ, जरा अपने कोठे पर तो देखो, शायद कुछ निशान मिले। कल दरवाजा तो खुला नहीं रह गया ?

प्रकाश का दिल धड़कने लगा। बोला—मैं तो दस बजे द्वार बन्द कर लेता हूँ। हाँ, कोई पहले से ही मौका पाकर कोठे पर चला गया हो और वहाँ छिपा बैठा रहा हो, तो बात दूसरी है।

तीनों आदमी छत पर गये, तो बीच की मुँडेर पर किसी के पाँव की रगड़ के निशान दिखाई दिए। जहाँ प्रकाश का पाँव पड़ा था, वहाँ का चूना लग जाने के कारण छत पर पाँव का निशान पड़ गया था। प्रकाश की छत पर जाकर मुँडेर की दूसरी तरफ देखा, तो वैसे ही निशान वहाँ भी दिखाई दिए। ठाकुर साहब सिर झुकाए खड़े थे, संकोच के मारे कुछ कह न सकते थे। प्रकाश ने उनके मन की बात खोल दी—इससे तो स्पष्ट होता है कि चोर मेरे ही घर में से आया। अब तो कोई सन्देह ही नहीं रहा।

ठाकुर साहब ने कहा—हाँ, मैं भी यही समझता हूँ; लेकिन इतना पता लग जाने से ही क्या हुआ। माल तो जाना था, सो गया। अब चलो, आराम से बैठें। आज रुपये की कोई फिक्र करनी होगी।

प्रकाश—मैं आज ही यह घर छोड़ दूँगा।

ठाकुर—क्यों, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं।

प्रकाश—आप न कहें, लेकिन मैं तो समझता हूँ, मेरे सिर बड़ा भारी अपराध लग गया। मेरा दरवाजा नौ-दस बजे तक खुला ही रहता है। चोर ने रास्ता देख लिया। सम्भव है, दो-चार दिन में फिर आ घुसे।

घर में अकेली एक औरत सारे घर की निगरानी नहीं कर सकती। इधर वह तो रसोई में बैठी है, उधर कोई आदमी चुपके से ऊपर चढ़ जाय, तो जरा भी आहट नहीं मिल सकती। मैं घूम घामकर कभी नौ बजे आया, कभी दस बजे और शादी के दिनों में तो देर होती ही रहेगी। उधर का रास्ता बन्द ही हो जाना चाहिए। मैं तो समझता हूँ, इस चोरी की सारी जिम्मेदारी मेरे सिर है।

ठकुराइन डरी—तुम चले जाओगे भैया, तब तो घर और फाड़ खायगा।

प्रकाश—कुछ भी हो माताजी, मुझे बहुत जल्द घर छोड़ना ही पड़ेगा। मेरी गफलत से चोरी हुई, उसका मुझे प्रायश्चित करना ही पड़ेगा।

प्रकाश चला गया, तो ठाकुर ने स्त्री से कहा—बड़ा लायक आदमी है।

ठकुराइन—क्या बात है। चोर उधर से आया, यही बात उसे लग गई। कहीं यह चोर को पकड़ पाए, तो कच्चा खा जाय।

"मार ही डाले!"

"देख लेना, कभी न कभी माल बरामद करेगा।"

"अब इस घर में कदापि न रहेगा, कितना ही समझाओ।"

"किराये के 20 रु० और दे दूंगा।"

"हम किराया क्यों दें? वह आप ही घर छोड़ रहे हैं। हम तो कुछ कहते नहीं।"

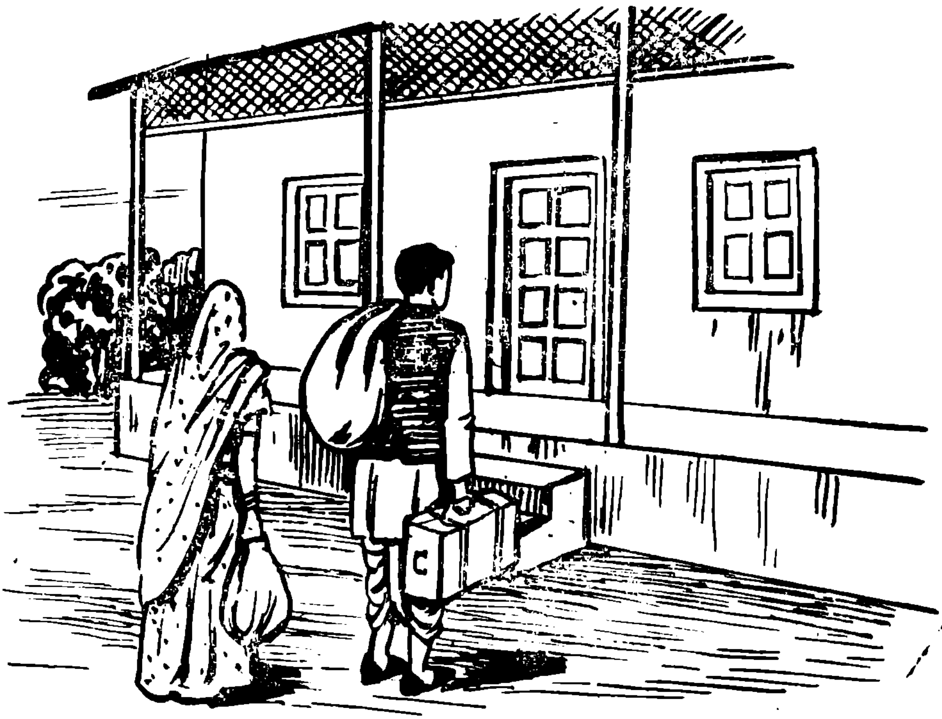
"किराया तो देना ही पड़ेगा। ऐसे आदमी के साथ कुछ बल भी खाना पड़े, तो बुरा नहीं लगता।"

"मैं तो समझती हूँ, यह किराया लेंगे ही नहीं।"

"तीस रुपये में गुजर भी तो न होता होगा।"

5

प्रकाश ने उसी दिन वह घर छोड़ दिया। उस घर में रहने से जोखिम था। लेकिन जब तक शादी की धूमधाम रही, प्रायः सारे दिन



यहीं रहते थे। चम्पा से कहा—एक सेठजी के यहाँ 50 रु० महीने का काम और मिल गया है; मगर वह रुपये मैं उन्हीं के पास जमा करता जाऊँगा। वह आमदनी केवल जेवरों में खर्च होगी। उसमें से एक पाई भी घर के खर्च में न आने दूँगा। चम्पा फड़क उठी। पति-प्रेम का यह परिचय पाकर उसने अपने भाग्य को सराहा, देवताओं मे उसकी श्रद्धा और भी बढ़ गई।

अब तक प्रकाश और चम्पा के बीच में कोई परदा न था। प्रकाश के पास जो कुछ था, वह चम्पा का था। चम्पा ही के पास उसके बक्स, सन्दूक, आलमारी की कुंजियाँ रहती थीं; मगर अब प्रकाश का एक सन्दूक हमेशा बन्द रहता। उसकी कुंजी कहाँ है, इसका चम्पा को पता नहीं। वह पूछती है, इस सन्दूक में क्या है, तो वह कह देता हैं—कुछ नहीं, पुरानी किताबें मारी-मारी फिरती थीं, उठाके सन्दूक में बन्द कर दी हैं। चम्पा को सन्देह का कोई कारण न था।

एक दिन चम्पा पति को पान देने गयी, तो देखा, वह उस सन्दूक को खोले हुए देख रहे हैं। उसे देखते ही उन्होंने सन्दूक जल्दी से बन्द कर दिया। उनका चेहरा जैसै फक हो गया। सन्देह का अंकुर जमा; मगर पानी न पाकर सूख गया। चम्पा किसी ऐसे कारण की कल्पना ही न कर सकी, जिससे सन्देह को आश्रय मिलता।

लेकिन पांच हजार की सम्पत्ति को इस तरह छोड़ देना कि उसका ध्यान हा न आये, प्रकाश के लिए असम्भव था। वह कहीं बाहर से आता, तो एक बार सन्दूक अवश्य खोलता।

एक दिन पड़ोस में चोरी हो गई। उस दिन से प्रकाश अपने कमरे ही में सोने लगा। असाढ़ के दिन थे। उमस के मारे दम घुटता

था। ऊपर एक साफ-सुथरा बरमादा था, जो बरसात में सोने के लिए ही शायद बनाया गया था। चम्पा ने कई बार ऊपर सोने के लिए कहा, पर प्रकाश ने न माना। अकेला घर कैसे छोड़ दे ?

चम्पा ने कहा--चोरी ऐसों के यहाँ नहीं होती। चोर घर में कुछ देखकर ही जान खतरे में डालता है। यहाँ क्या रखा है ?

प्रकाश क्रुद्ध होकर कहा—कुछ नहीं है, बरतन-भाँड़े तो हैं ही। गरीब के लिए अपनी हाँड़ी ही बहुत है।

एक दिन चम्पा ने कमरे में झाड़ू लगायी, तो सन्दूक को खिसकाकर दूसरी तरफ रख दिया। प्रकाश ने सन्दूक का स्थान बदला हुआ पाया, तो सशंक होकर बोला—सन्दूक तुमने हटाया ?

यह पूछने की कोई बात न थी। झाड़ू लगाते वक्त प्रायः चीजें इधर-उधर खिसक ही जाती हैं। बोली—मैं क्यों हटाने लगी ?

"फिर किसने हटाया !"

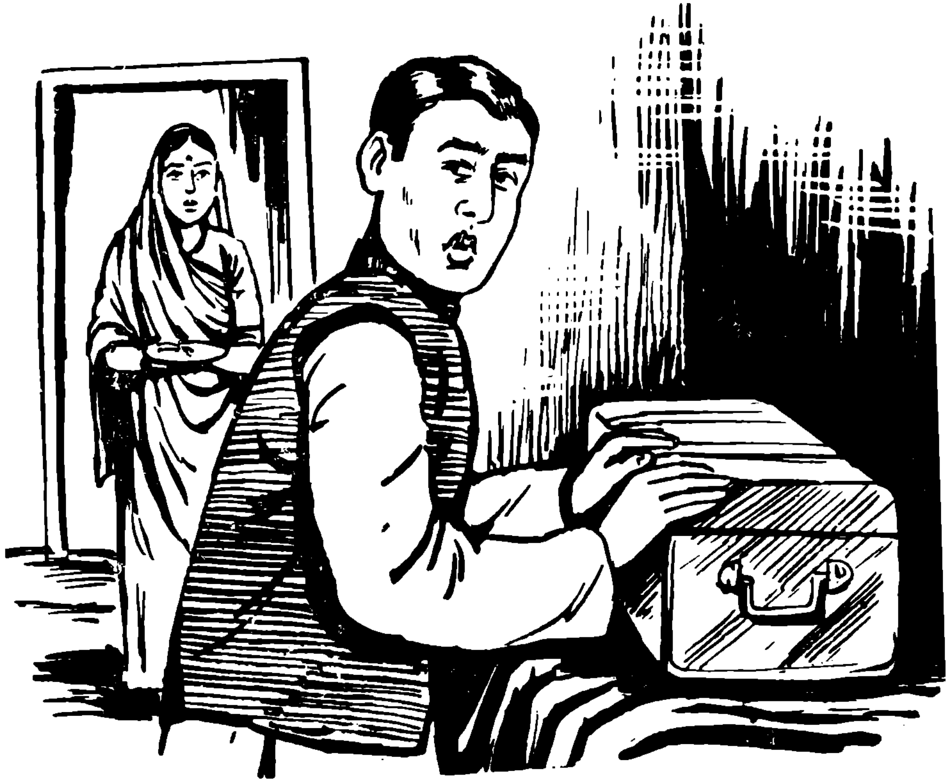
"मैं नहीं जानती ?"

"घर में तुम रहती हो, जानेगा कौन ?"

"अच्छा, अगर मैंने ही हटा दिया, तो इसमें पूछने की क्या बात है ?

"कुछ नहीं, यों ही पूछता था।"

मगर जब तक सन्दूक खोलकर सब चीज देख न ले, प्रकाश को चैन कहाँ ? चम्पा ज्योंही भोजन पकाने लगी, उसने सन्दूक खोला और



आभूषणों को देखने लगा। आज चम्पा ने पकौड़ियाँ बनाई थीं। पकौड़ियाँ गरम-गरम ही मजा देती हैं। प्रकाश को पकौड़ियाँ पसन्द भी थीं। उसने थोड़ी-सी पकौड़ियाँ एक तश्तरी में रखीं और प्रकाश को देने गयी। प्रकाश ने उसके देखते ही सन्दूक धमाके से बन्द कर दिया और ताला लगाकर उसे बहलाने के इरादे से बोला—तश्तरी में क्या लायीं ? अच्छा, पकौड़ियां हैं ?

आज चम्पा को सन्देह हो गया। सन्दूक में क्या है, यह देखने की उत्सुकता हुई। प्रकाश उसकी कुंजी कहीं छिपाकर रखता था। चम्पा

किसी तरह वह कुंजी उड़ा लेने की चाल सोचने लगी। एक दिन एक बिसाती कुंजियों का गुन्छा बेचने आ निकला। चम्पा ने उस ताले की कुंजी ले ली और सन्दूक खोल डाली। अरे ! ये तो आभूषण हैं ! उसने एक-एक आभूषण को निकालकर देखा। ये गहने कहाँ से आये ! मुझसे इनकी चर्चा नहीं की। सहसा उसके मन में भाव उठा—कहीं ये ठाकुर साहब के गहने तो नहीं हैं ? चीजें वही थीं, जिनका वह बखान करते रहते थे। उसे अब कोई सन्देह न रहा; लेकिन इहना घोर पतन ! लज्जा और खेद से उसका सिर झुक गया।

उसने तुरन्त सन्दूक बन्द कर दिया और चारपाई पर लेटकर सोचने लगी। इनकी इतनी हिम्मत पड़ी कैसे ? यह दुर्भावना इनके मन में आयी ही क्यों ? मैंने तो कभी आभूषणों के लिए आग्रह नहीं किया। अगर आग्रह भी करती, तो क्या उसका आशय यह होता कि वह चोरी करके लाएँ ? चोरी—आभूषणों के लिए ! इनका मन क्यों इतना दुर्बल हो गया ?

उसके जी में आया, इन गहनों को उठा ले और ठकुराइन के चरणों पर डाल दे। उनसे कहे—यह मत पूछिए, ये गहने मेरे पास कैसे आये ! आपकी चीज आपके पास आ गई, इसी से सन्तोष कर लीजिए।

लेकिन परिणाम कितना भयंकर होगा।

6

उस दिन से चम्पा कुछ उदास रहने लगी। प्रकाश से उसे वह प्रेम न रहा, न वह सम्मान-भाव। बात-बात पर तकरार होती। अभाव में जो



परस्पर सद्‌भाव था, वह गायब हो गया। तब एक दूसरे से दिल की बात कहता था, भविष्य के मनसूबे बाँधे जाते थे, आपस में सहानुभूति थी। अब दोनों ही दिलगीर रहते। कई-कई दिनों तक आपस में एक बात भी न होती।

कई महीने गुजर गए। शहर के एक बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर की जगह खाली हुई। प्रकाश ने अर्थशास्त्र पढ़ा था; लेकिन शर्त यह थी कि नकद दस हजार की जमानत दाखिल की जाय। इतनी बड़ी रकम कहाँ से आए? प्रकाश तड़प-तड़पकर रह जाता था।

एक दिन ठाकुर साहब से इस विषय में बात चल पड़ी।

ठाकुर साहब ने कहा—तुम क्यों नहीं दरख्वास्त भेजते?

प्रकाश ने सिर झुकाकर कहा—दस हजार की नकद जमानत माँगते हैं। मेरे पास रुपये कहाँ रखे हैं?

"अजी तुम दरख्वास्त तो दो। अगर सारी बातें तय हो जायें, तो जमानत भी दे दी जायगी। इसकी चिन्ता न करो।"

प्रकाश ने स्तम्भित होकर कहा—आप जमानत दे देंगे?

"हाँ-हाँ, यह कौन-सी बड़ी बात है।"

प्रकाश घर चला तो बहुत रंजीदा था। उसको यह जगह अब अवश्य मिलेगी; लेकिन फिर भी वह प्रसन्न नहीं है। ठाकुर साहब की सरलता, उनका उस पर इतना अटल विश्वास उसे आहत कर रहा है। उनकी शराफत उसके कमीनेपन को कुचले डालती है।

उसने घर आकर च
सुनकर मुँह फेर लिया। एक
क्यों जमानत दिलवायी ?

प्रकाश ने चिढ़कर कहा

"यही न होता कि
जातीं। रुपये-पैसे की बात है
उनके रुपये भी जायँ।"

"यह तुम कैसे समझती हो कि भूल-चूक होगी ? क्या मैं ऐसा अनाड़ी हूँ ?"

चम्पा ने विरक्त मन से कहा—आदमी की नीयत भी तो हमेशा एक-सी नहीं रहती !

प्रकाश ठक-से रह गया। उसने चम्पा को चुभती हुई आँखों से देखा; पर चम्पा ने मुँह फेर लिया था। वह उसके भावो के विषय में कुछ निश्चय न कर सका; लेकिन ऐसी खुशखबरी सुनकर भी चम्पा का उदासीन रहना उसे विकल करने लगा। उसके मन में प्रश्न उठा—इस वाक्य में कहीं आक्षेप तो नहीं छिपा हुआ है ? चम्पा ने सन्दूक खोलकर देख तो नहीं लिया ? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए इस समय वह अपनी एक आँख भी भेंट कर सकता था।

भोजन करते समय प्रकाश ने चम्पा से पूछा—तुमने क्या सोचकर कहा था कि आदमी की नीयत तो हमेशा एक-सी नहीं रहती ? जैसे यह उसके जीवन या मृत्यु का प्रश्न हो।

चम्पा ने संकट में पड़कर कहा—कुछ नहीं, मैंने दुनियाँ की बात कही थी। प्रकाश को सन्तोष न हुआ।

"क्या जितने आदमी बैंकों में नौकर हैं, उनकी नीयत बदलती रहती है ?" वह बोला।

चम्पा ने गला छुडाना चाहा—तुम जबान पकड़ते हो। ठाकुर साहब के यहाँ इस शादी में तुम अपनी नीयत ठीक नहीं रख सके। सौ-दो सौ रुपये की चीजें घर में रख ही लीं।

प्रकाश के दिल से बोझ उतर गया। मुस्कराकर बोला—अच्छा, तुम्हारा संकेत उस तरफ था लेकिन मैंने कमीशन के सिवा उनकी एक पाई भी नहीं छुई। और कमीशन लेना तो कोई पाप नहीं! बड़े-बड़े हुक्काम खुले खजाने कमीशन लिया करते हैं।

चम्पा ने तिरस्कार के भाव से कहा—जो आदमी अपने ऊपर इतना विश्वास रखे, उसकी आँख बचाकर एक पाई भी लेना मैं पाप समझती हूँ। तुम्हारी सज्जनता तो मैं जब जानती कि तुम कमीशन के रुपये ले जाकर उनके हवाले कर देते। इन छः महीनों में उन्होंने तुम्हारे साथ क्या-क्या सलूक किए, कुछ याद है? मकान तुमने खुद छोड़ा; लेकिन वह 20 रु० महीने देते हैं। इलाके से कोई सौगात आती है, तो तुम्हारे यहाँ जरूर भेजते हैं। तुम्हारे पास घड़ी न थी, अपनी घड़ी तुम्हें दे दी। तुम्हारी महरी जब नागा करती है, खबर पाते ही अपना नौकर भेज देते हैं। मेरी बीमारी ही में डाक्टर साहब की फीस उन्होंने दी, और दिन में दो बार हाल-चाल भी पूछने आया करते थे। यह जमानत ही क्या छोटी बात है? अपने सम्बन्धियों तक की जमानत तो जल्दी कोई करता नहीं, तुम्हारी जमानत के लिए दस हजार रुपये नकद निकालकर दे दिये। इसे तुम छोटी बात समझते हो? आज तुमसे कोई भूल-चूक हो जाय, तो उनके रुपये तो जब्त हो ही जायँगे। जो आदमी अपने ऊपर इतनी दया रखे, उसके लिए हमें भी प्राण देने को तैयार रहना चाहिए।

प्रकाश भोजन करके लेटा, तो उसकी आत्मा उसे धिक्कार रही थी। दुखते हुए फोड़े में कितना मवाद भरा हुआ है, यह उस वक्त मालूम होता है, जब नश्तर लगाया जाता है। मन का विकार उस वक्त मालूम होता है, जब कोई उसे हमारे सामने खोलकर रख देता है। किसी सामा-

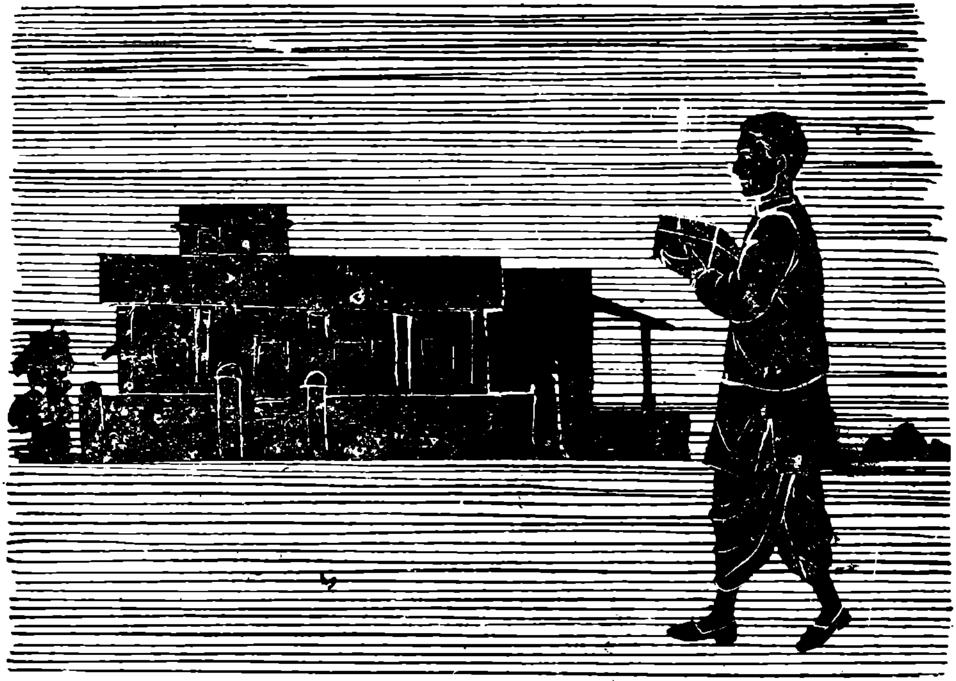
जिक या राजनीतिक अन्याय का व्यंग्य-चित्र देखकर क्यों हमारे मन को चोट लगती है ? इसलिए कि वह चित्र हमारी पशुता को खोलकर हमारे सामने रख देता है। वह, जो मनोसागर में बिखरा हुआ पड़ा था, जैसे केंद्रीभूत होकर वृहदाकार हो जाता है। तब हमारे मुँह से निकल पड़ता है--उफ्फोह ! चम्पा के इन तिरस्कार-भरे शब्दों ने प्रकाश के मन में ग्लानि उत्पन्न कर दी। यह सन्दूक कई गुना भारी होकर शिला की भाँति उसे दबाने लगा। मन में फैला हुआ विकार एक बिन्दु पर एकत्र होकर टीसने लगा।

7

कई दिन बीत गए। प्रकाश को बैंक में जगह मिल गई। उस उत्सव में उसके यहाँ मेहमानों की दावत है। ठाकुर साहब, उनकी स्त्री, बीरू और उसकी नवेली बहू—सभी आये हुए हैं। चम्पा सेवा-सत्कार में लगी हुई है। बाहर दो-चार मित्र गा-बजा रहे हैं। भोजन करने के बाद ठाकुर साहब चलने को तैयार हुए।

प्रकाश ने कहा—आज आपको यहाँ रहना होगा, दादा ! मैं इस वक्त न जाने दूँगा !

चम्पा को उसका यह आग्रह बुरा लगा। चारपाइयाँ नहीं हैं, बिछावन नहीं है और न काफी जगह ही है। रात-भर उन्हें तकलीफ देने और आप तकलीफ उठाने की कोई जरूरत उसकी समझ में न आई; लेकिन प्रकाश आग्रह करता ही रहा, यहाँ तक कि ठाकुर साहब राजी हो गए।



बारह बज गए थे। ठाकुर साहब ऊपर सो रहे थे। बीरू और प्रकाश बरामदे में थे। तीनों स्त्रियाँ अन्दर कमरे में थीं। प्रकाश जाग रहा था। बीरू के सिरहाने उसकी कुँजियों का गुच्छा पड़ा हुआ था। प्रकाश ने गुच्छा उठा लिया। फिर कमरा खोलकर उसमें से गहनों का सन्दूकचा निकाला और ठाकुर साहब के घर की तरफ चला। कई महीने पहले वह इसी भाँति कम्पित हृदय के साथ ठाकुर साहब के घर में घुसा था। उसके पाँव तब भी इसी तरह थरथरा रहे थे; लेकिन तब काँटा चुभने की वेदना थी, आज काँटा निकलने की। तब ज्वर का चढ़ाव था उन्माद, ताप और विकलता से भरा हुआ; अब ज्वर का

उतार था—शान्त और शीतल। तब कदम पीछे हटता था, आज आगे बढ़ रहा था।

ठाकुर साहब के घर पहुँचकर उसने धीरे से बीरू का कमरा खोला और अन्दर जाकर साहब की खाट के नीचे सन्दूकचा रख दिया। फिर तुरन्त बाहर धीरे से द्वार बन्द किया और घर को लौट पड़ा। हनुमान संजीवनी बूटीवाला धवलगिरि उठाए जिस गर्वीले आनन्द का अनुभव कर रहे थे, कुछ वैसा ही आनन्द प्रकाश को भी हो रहा था। गहनों को अपने घर ले जाते समय उनके प्राण सुखे हुए थे, मानो किसी गहरी अथाह खाई में गिरा जा रहा हो। आज सन्दूकचे को लौटाकर उसे मालूम हो रहा था, जैसे वह किसी विमान पर बैठा हुआ आकाश की ओर उड़ा जा रहा है—ऊपर, ऊपर और ऊपर!

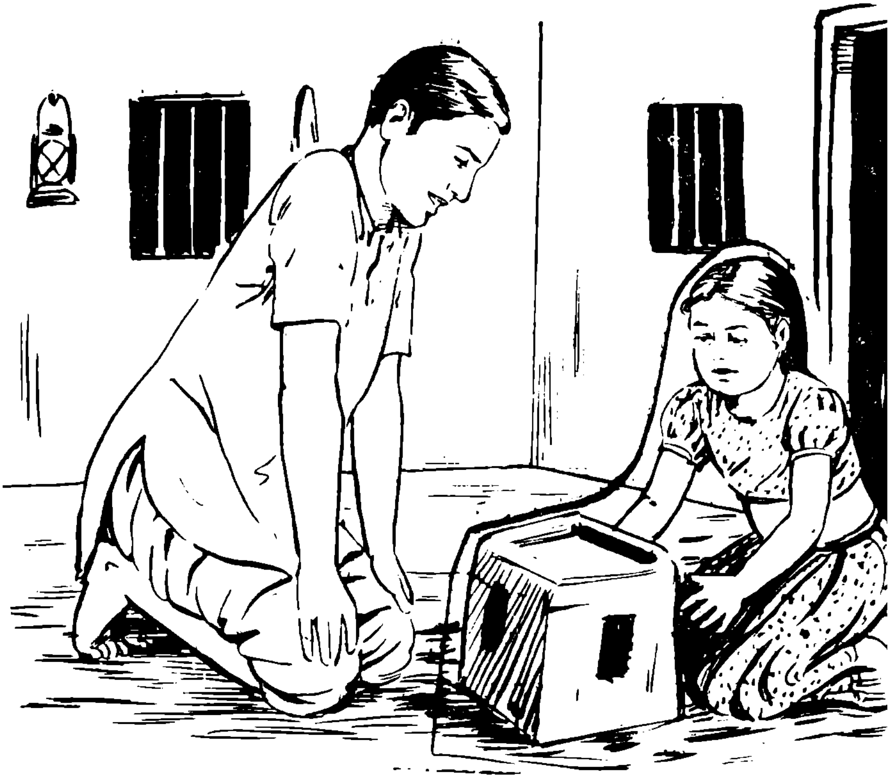
वह घर पहुँचा, तो बीरू सोया हुआ था। कुंजी उसने सिरहाने रख दी।

8

ठाकुर साहब प्रातःकाल चले गये।

प्रकाश सन्ध्या समय पढ़ाने जाया करता था। आज़ वह अधीर होकर तीसरे ही पहर जा पहुँचा। देखना चाहता था, वहां आज क्या गुल खिल रहे हैं।

वीरेन्द्र ने उसे देखते ही खुश होकर कहा—बाबूजी, कल आपके यहां की दावत बड़ी मुबारक थी। जो गहने चोरी गए थे, सब मिल गए।



ठाकुर साहब भी आ गए बोले—बड़ी मुबारक दावत थी तुम्हा
पूरा सन्दूक का सन्दूक मिल गया। एक चीज भी नहीं छुई। जैसे
रखने ही के लिए ले गया हो।

प्रकाश को इन बातों पर कैसे विश्वास आए, जब तक वह अ
आंखों से सन्दूक देख न ले। कहीं ऐसा भी हो सकता है कि चोरी
हुआ माल छः महीने बाद मिल जाय, और ज्यों का त्यों !

सन्दूक को देखकर उसने गम्भीर भाव से कहा—बड़े आश्चर्य
बात है। मेरी बुद्धि तो कुछ काम नहीं करती।

ठाकुर—किसी की बुद्धि कुछ काम नहीं करती भई, तुम्हारी ही क्यों ? बीरू की माँ कहती है, कोई दैवी घटना है। आज मुझे भी देवताओं में श्रद्धा हो गई।

प्रकाश—अगर आँखों-देखी बात न होती, तो मुझे कभी विश्वास ही न आता।

ठाकुर—आज इस खुशी में हमारे यहाँ दावत होगी।

प्रकाश—आपने कोई अनुष्ठान तो नहीं कराया था ?

ठाकुर—अनुष्ठान तो बीसों ही कराए।

प्रकाश—बस, तो यह अनुष्ठान ही की करामात है।

घर लौटकर प्रकाश ने चम्पा को यह खबर सुनायी, तो वह दौड़कर उनके गले से चिपट गई और न जाने क्यों रोने लगी, जैसे उसका बिछुड़ा हुआ पति बहुत दिनों के बाद घर आ गया हो।

प्रकाश ने कहा—आज उनके यहाँ हमारी दावत है।

"मैं कल एक हजार कंगलों को भोजन कराऊँगी।"

"तुम तो सैकड़ों का खर्च बतला रही हो।"

"मुझे इतना आनन्द हो रहा है कि लाखों खर्च करने पर भी अरमान पूरा न होगा।"

प्रकाश की आँखों से भी आँसू निकल आए। □



मुन्शी प्रेमचंद का सचित्र किशोर साहित्य

स्वामी विवेकानन्द	मृतक भोज	शतरंज के खिलाड़ी
महाराणा प्रताप	सत्याग्रह	बलिदान की बेदी
अकबर महान	दूध का दाम	पछतावा
पंच परमेश्वर	मुक्ति मार्ग	खुदाई फौजदार
शराब की दुकान	शंखनाद	रानी सारन्धा
ईदगाह	सद्गति	कजाकी
बड़े घर की बेटी	घरजमाई	महातीर्थ
नमक का दरोगा	मर्यादा की वेदी	बालक
गुल्ली डण्डा	दो भाई	बड़े भाई साहब
दो बैलों की कथा	मंत्र	समरयात्रा
ठाकुर का कुआ	राजा हरदौल	न्याय
बूढ़ी काकी	राजा मानसिंह	स्वामिनी
सुजान भगत	गोपालकृष्ण गोखले	झाँकी
ममता	माँ	जंगल की कहानियाँ
मन्दिर	शान्ति	नशा
पूस की रात	क्षमा	स्मृति का पुजारी
चमत्कार		